International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 769-774

उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

[1] डॉ0 कविता मिततल, [2] शशि चौधरी
[1] प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान, भारत।
[2] शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान, भारत।

सारांश
शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है और श्रृंगार भी करती है। शिक्षा व्यक्ति की रचनात्मक शक्ति का विकास करती है। प्रत्येक समाज में शिक्षकों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उस राष्ट्र के अध्यापकों की कुशलता पर निर्भर करता है। अतः शिक्षकों में अपने संवेगों की तथा दूसरे के संवेगों की अच्छी समझ होना आवश्यक है या कहा जा सकता है कि शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न पक्ष जैसे–स्वयं के संवेगों का बोध, स्वंय के संवेगों का प्रबंधन, दूसरे के संवेगों का बोध तथा दूसरे के संवेगों के प्रबंधन को लिंग एवं विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है।

मूल शब्दः शिक्षा, शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षक।

प्रस्तावना
शिक्षा मानव जीवन का आधार है। मानव का विकास और उन्नयन शिक्षा पर ही निर्भर है। मानव के सर्वागीण विकास के लिए शिक्षा व शिक्षा के प्रभावी विस्तार के लिए कुशल शिक्षक को तैयार करना आवश्यक है। शिक्षक ही विद्यार्थियों को अधिगम के लिए जिज्ञासु बनाते हैं और उनको वांछित लक्ष्य की और अग्रसर करते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया अन्तःवैयक्तिक प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी एवं शिक्षक के मध्य अन्तःक्रिया होती है इसलिए शिक्षक एवं विद्यार्थियों के न केवल बौद्धिक गुण अपितु संवेगात्मक व्यवहार भी एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। विभिन्न परिस्थितियों में शान्ति के साथ कार्य करना और वांछित व्यवहार करने को ही मनोवैज्ञानिक भाषा में संवेगात्मक बुद्धि कहा जाता है। इसलिए शिक्षा की प्रक्रिया से जुड़े सभी व्यक्तियों की संवेगात्मक बुद्धि शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने का एक महत्वपूर्ण घटक बनती है।
संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति में निहित वह क्षमता है जिसके आधार पर वह अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझ पाता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को उसके संवेगों को उचित रुप में अभिव्यक्त करने की क्षमता प्रदान कर उसके व्यक्तित्व का विकास भी करती है। शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तित्व का विकास करना है, जिसमें संवेगात्मक बुद्धि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संवेगात्मक रूप से सक्षम शिक्षक विद्यार्थियों को उचित रूप से अभिप्रेरित कर समय का सदुपयोग करना सिखाता है तथा नेतृत्व क्षमता का विकास भी करता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को सामूहिक रूप में अधिक प्रभावी ढ़ंग से कार्य करने में सहायता करती है। सामान्य रूप से संवेगात्मक बुद्धि जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप में लाभदायक सिद्ध होती है।
सवेंगात्मक बुद्धि की परिभाषायें इस प्रकार हैं :–

संवेगात्मक बुद्धि की परिभाषाएँ
गोलमैन के अनुसार :– संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के स्वयं के एवं दूसरों के संवेगों को पहचानने की वह क्षमता है जो हमें प्रेरित कर सकने और हमारे संवेगों को स्वयं में और अपने संबंधों के दौरान भली प्रकार से साधने में सहायक होती है।

सोलवे मैयर के अनुसार :– संवेगात्मक बुद्धि, संवेगों का प्रत्यक्षीकरण करने, उन्हें समझने, उसका प्रबन्धन करने एवं उन्हें प्रयोग में लाने की योग्यता है।

एस. हेन के अनुसार :– संवेगात्मक बुद्धि एक मानसिक क्षमता है जिसके साथ हम जन्म लेते हैं, जो हमे संवेगात्मक रूप से संवेदनशीलता तथा हमारी क्षमताओं को संवेगात्मक समझ प्रदान करती है।

हाइन के अनुसार :– संवेगात्मक बुद्धि संवेगों को अनुभव करने, प्रयोग करने, उन्हें सम्प्रेषित करने, पहचानने, स्मरण करने, उससे सीखने, उसके प्रबन्धन एवं अवबोध की जन्मजात सामर्थ्य है।
अतः उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि एक जन्मजात तथा सार्वभौमिक योग्यता है जो कि व्यक्ति के प्रत्येक क्रियाकलापों को प्रभावित करती है। संवेगात्मक बुद्धि में व्यक्तिगत भिन्नता पाई जाती है। संवेगात्मक बुद्धि का सम्बन्ध न केवल अपने संवेगों को समझने से है वरन् दूसरे के सेवेंगो को ठीक रूप से समझने से भी है।
शोधकर्त्री द्वारा शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन किया गया हैः–

ओकेच (2004) ने एन एक्सप्लोरेटरी एक्जामिनेशन ऑफ द रिलेशनशिप अमंग इमोशनल इन्टेलीजेन्स, सेल्फ एकिकेसी, लेन्थ ऑफ टीचिंग एक्सपीरियेन्स, एथनीसिटी, एण्ड एज ऑफ ऐलीमेन्टरी स्कूल साइंस टीचर नामक अध्ययन किया, **लथा, संगीथा रामास्वामी एवं अनन्थसयनम (2005)** ने ए स्टडी ऑफ इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड इट्स इफेक्ट ऑन टीचर्स इफेक्टिवनेस अमंग स्कूल टीचर्स पर अध्ययन किया, **अभिरथा एवं कथिरवन (2006)** ने अध्यापकों के व्यक्तित्व और संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया, **लोर्डनोग्लोउ (2007)** ने द रिलेशनशिप बिटविन इमोशनल

इन्टेलीजेन्स, लीडरशिप, जॉब कमिटमेन्ट एण्ड सेटिसफेक्शन अमंग प्राइमरी टीचर्स इन ग्रीस पर अध्ययन किया। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि का विभिन्न चरों के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया जिससे प्रस्तुत शोध हेतु शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का लिंग एवं विद्यालय प्रकृति के निर्धारण के लिए निर्देशन प्राप्त हुआ।

समस्या कथन :–

उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य :–

- उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का लिंग के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में लिंग के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन के चर

स्वतन्त्र चर :– संवेगात्मक बुद्धि
आश्रित चर :– शिक्षक
मध्यस्थ चर :– लिंग, विद्यालय प्रकृति

संक्रियात्मक परिभाषायें

उच्च प्राथमिक शिक्षक

प्रस्तुत शोध में उच्च प्राथमिक शिक्षकों से अभिप्राय सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कक्षा 6,7,8 में शिक्षण करने वाले शिक्षकों से है।

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि अपने एवं दूसरे के भावों को पहचानने की क्षमता तथा अपने आपको अभिप्रेरित करके एवं अपने संबंधों में संवेगों को प्रबंधित करने की क्षमता है।संवेगात्मक बुद्धि से अभिप्राय स्व–जागरूकता, स्वयं के संवेगों का प्रबन्धन, स्व अभिप्रेरणा, परानुभूति तथा संबंध एवं व्यवहारों के प्रबंधन पक्षों से है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध की समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखकर सर्वेक्षण विधि को शोध विधि के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

प्रदत्तों के स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के स्रोत प्राथमिक हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करने वाले शिक्षक प्रदत्तों के स्रोत हैं।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध हेतु जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश के आगरा मंडल के मथुरा तथा आगरा, जिले के उच्च प्राथमिक स्तरीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक हैं।

न्यायदर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा आगरा मंडल के मथुरा और आगरा जिले के उच्च प्राथमिक स्तरीय विद्यालयों में कार्यरत कुल 800 शिक्षकों (400 महिला तथा 400 पुरुष) को यादृच्छिक विधि के माध्यम से न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

शोध उपकरण

शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्त संकलन हेतु टीचर्स इमोशनल इन्टेलीजेन्स इनवेन्टरी (डॉ शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित) शोध उपकरण प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्ययन के उद्देश्यों एवं प्रदत्तों की प्रकृति के आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकी द्वारा किया गया है।

1.लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

उच्च प्राथमिक स्तर पर कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी प्रदत्तों के विश्लेषण को तालिका व रेखाचित्र 1 द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

तलिका व रेखाचित्र 1: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के अन्तर का सार्थकता स्तरः

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	सारणी टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	ज्ंइसम टंसनम	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	400	671.51	84.51	4.22	0.758	998	= 0.01 2.58	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	400	667.10	80.73	4.03			=0.05 1.96	

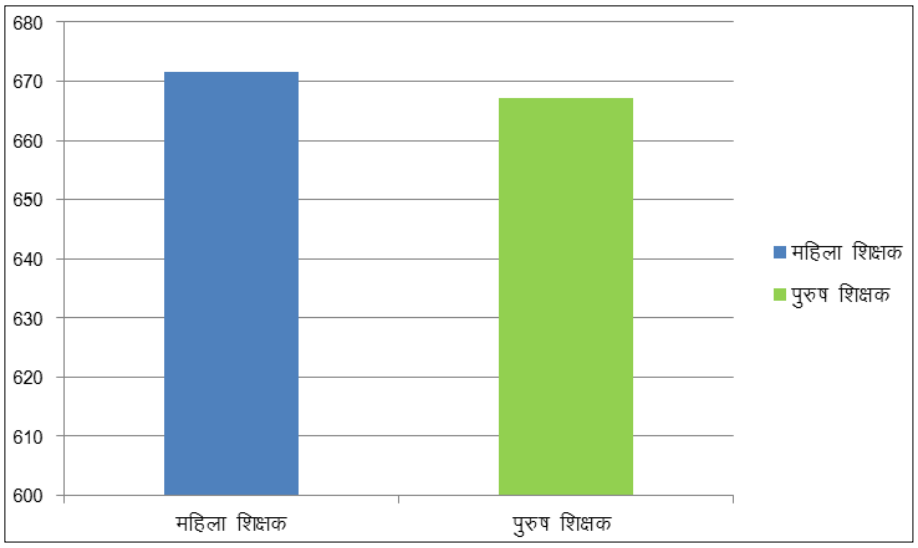

रेखाचित्र 1

तालिका व रेखाचित्र 1 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 671.53 है तथा पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 667.10 है। महिला एवं पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मानक विचलन क्रमशः 84.51 एवं 80.73 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.758 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.58 तथा 0.05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना–1 ''उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में लिंग के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः महिला व पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि समान होती है।

2. विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

उच्च प्राथमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी प्रदत्तों के विश्लेषण को तालिका व रेखाचित्र 2 द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

तालिका व रेखाचित्र 2: विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के अन्तर का सार्थकता स्तरः

विद्यालय प्रकृति	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	ज्ंइसम टंसनम	सार्थक अन्तर (L.S.)
सरकारी	400	668.45	86.02	4.30	0.295	798	= 0.01 2.58	सार्थक अन्तर नहीं है।
गैर–सरकारी	400	667.10	80.73	4.03			=0.05 1.96	

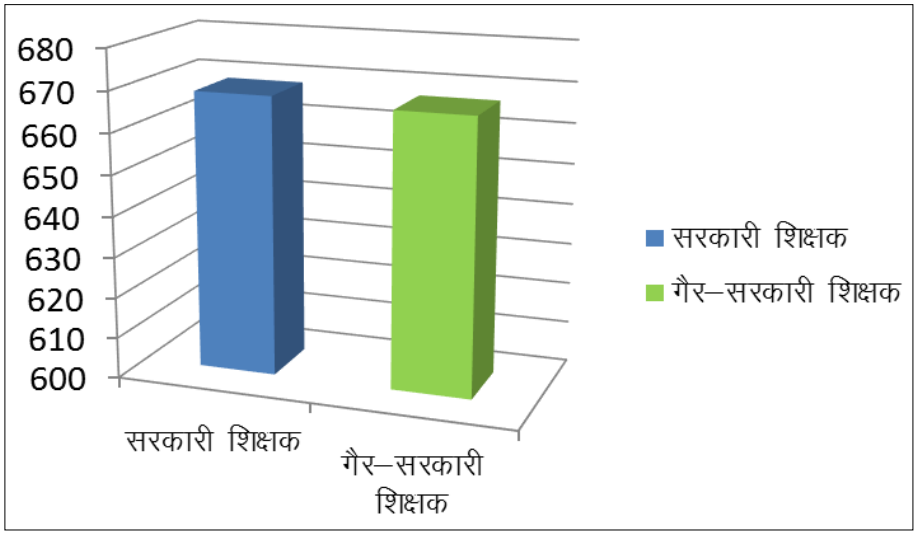

रेखाचित्र 2

तालिका एवं रेखाचित्र 2 से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान क्रमशः 668. 45 व 670.18 है। सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मानक विचलन 86.02 है एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मानक विचलन 79.16 है। प्राप्त माध्यों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.295 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.58 तथा 0.05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना–2 ''उच्च प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है।

अतः कहा जा सकता है कि सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि समान होती है।

निष्कर्ष

उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि के अधिकांश क्षेत्रों में महिला व पुरुष एवं सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षकों के मध्य सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी है। अतः यह कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरुष तथा सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षकों की भागीदारी संवेगात्मक बुद्धि के सभी क्षेत्रों में समान रुप से दृष्टिगोचर हुयी है।

तलिका 3

विद्यालयप्रकृति	N	M	S.D.	S.E.	T.val	Tab. Val.	Level of sign.
सरकारी	200	676.67	93.16	6.58	1.44 Df =398	2.59	Sig. at 0.01
गैर– सरकारी	200	656.46	70.89	5.01		1.96	Sig. at 0.05

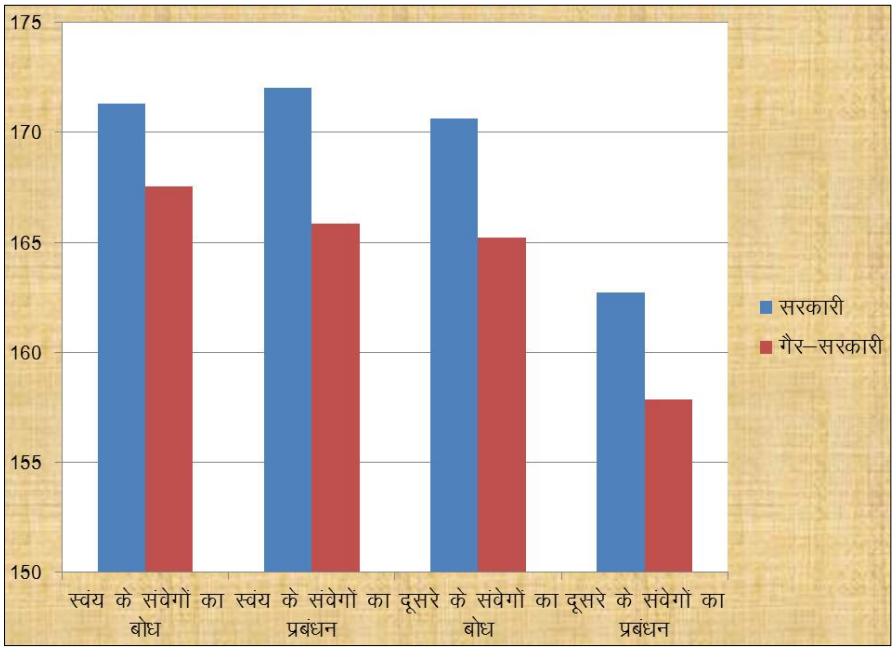

रेखाचित्र 3

तलिका व रेखाचित्र 1 से स्पष्ट होता है कि सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 676.67 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 656.46 है। सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मानक विचलन 93.16 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का मानक विचलन 70.89 है। दोनो मध्यमानों के मध्य सार्थक अंतर जॉच करने के पश्चात टी मूल्य 1. 44 है जो दोनो .01 तथा .05 सार्थकता स्तर के सारणी मूल्य से कम है। अतः उच्च प्राथमिक स्तरीय सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

अतः परिकल्पना संख्या 1 'उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में विद्यालय प्रकृति के आधार पर भिन्नता नहीं पायी जाती है' स्वीकार की जाती है।

2.उच्च प्राथमिक शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के बोध का विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में सार्थकता स्तरः

तलिका 4

विद्यालयप्रकृति	N	M	S.D.	S.E.	T.val	Tab. Val.	Level of sign.
स्रकारी	200	171.29	27.64	1.95	1.52 Df =398	2.59	Sig. at 0.01
गैर– सरकारी	200	167.54	21.35	1.50		1.96	Sig. at 0.05

तलिका संख्या 2 से स्पष्ट होता है कि सरकारी शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के बोध का मध्यमान 171.29 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के बोध का मध्यमान 167.54 है। सरकारी शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के बोध का मानक विचलन 27.64 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के बोध का मानक विचलन 21.35 है। दोनो मध्यमानों के मध्य सार्थक अंतर जॉच करने के पश्चात टी मूल्य 1.52 है जो दोनो 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मूल्य से कम है। अतः प्राथमिक स्तरीय सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के मध्य स्वंय के सवेगों के बोध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

अतः परिकल्पना संख्या 1.1 'प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों की स्वंय के संवेगों के बोध के प्रति विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में भिन्नता नहीं पायी जाती है' स्वीकार की जाती है।

3.उच्च प्राथमिक शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के प्रबंधन का विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में सार्थकता स्तरः

तलिका 5

विद्यालयप्रकृति	N	M	S.D.	S.E.	T.val	Tab. Val.	Level of sign.
स्रकारी	200	172.02	25.39	1.79	1.75	2.59	Sig. at 0.01
गैर– सरकारी	200	165.84	19.02	1.34	Df =398	1.96	Sig. at 0.05

तलिका संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि सरकारी शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के प्रबंधन का मध्यमान 172.02 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के प्रबंधन बोध का मध्यमान 165.84 है। सरकारी शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के बोध प्रबंधन का मानक विचलन 25.39 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के स्वंय के सवेगों के प्रबंधन बोध का मानक विचलन 19.02 है। दोनो मध्यमानों के मध्य सार्थक अंतर जॉच करने के पश्चात टी मूल्य 1.75 है जो दोनो 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मूल्य से कम है। अतः प्राथमिक स्तरीय सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के मध्य स्वंय के सवेगों के प्रबंधन बोध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

अतः परिकल्पना संख्या 1.2 'प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों की स्वंय के संवेगों के प्रबंधन के प्रति विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ मे भिन्नता नहीं पायी जाती है' स्वीकार की जाती है।

4.उच्च प्राथमिक शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के बोध का विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में सार्थकता स्तर :

तलिका 6

विद्यालयप्रकृति	N	M	S.D.	S.E.	T.val	Tab. Val.	Level of sign.
स्रकारी	200	170.62	23.20	1.64	1.52	2.59	Sig. at 0.01
गैर– सरकारी	200	165.22	19.40	1.37	Df =398	1.96	Sig. at 0.05

तलिका संख्या 4 से स्पष्ट होता है कि सरकारी शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के बोध का मध्यमान 170.62 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के बोध का मध्यमान 165.22 है। सरकारी शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के बोध का मानक विचलन 23.20 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के बोध का मानक विचलन 19.40 है। दोनो मध्यमानों के मध्य सार्थक अंतर जॉच करने के पश्चात टी मूल्य 1.52 है जो दोनो 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मूल्य से कम है। अतः प्राथमिक स्तरीय सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के मध्य दूसरे के सवेगों के बोध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

अतः परिकल्पना संख्या 1.3 'प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों की दूसरे के संवेगों के बोध के प्रति विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में भिन्नता नहीं पायी जाती है' स्वीकार की जाती है।

5.उच्च प्राथमिक शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के प्रबंधन का विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में सार्थकता स्तर :

तलिका 7

विद्यालयप्रकृति	N	M	S.D.	S.E.	T.val	Tab. Val.	Level of sign.
स्रकारी	200	162.74	29.18	2.06	1.81	2.59	Sig. at 0.01
गैर– सरकारी	200	157.85	24.57	1.73	Df =398	1.96	Sig. at 0.05

तलिका संख्या 5 से स्पष्ट होता है कि सरकारी शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के प्रबंधन का मध्यमान 162.74 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के प्रबंधन का मध्यमान 157.85 है। सरकारी शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के प्रबंधन का मानक विचलन 29.18 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के दूसरे के सवेगों के प्रबंधन का मानक विचलन 24.57 है। दोनो मध्यमानों के मध्य सार्थक अंतर जॉच करने के पश्चात टी मूल्य 1.81 है जो दोनो 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मूल्य से कम है। अतः प्राथमिक स्तरीय सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के मध्य दूसरे के सवेगों के प्रबंधन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

अतः परिकल्पना संख्या 1.4 'प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों की दूसरे के संवेगों के प्रबंधन के प्रति विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में भिन्नता नहीं पायी जाती है' स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष

प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित प्राप्त

प्रदत्तों के आधार पर कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि के अधिकांश क्षेत्रों में महिला एवं पुरु शिक्षकों के मध्य सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी है परन्तु विश्लेषण के पश्चात प्राप्त आरेख चित्र से स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक बुद्धि के स्वंय के संवेगों का बोध क्षेत्र में सरकारी शिक्षक बेहतर पाये गये तथा स्वंय के संवेगों का प्रबंधन क्षेत्र में गैर–सरकारी शिक्षक बेहतर पाये गये वहीं पर दूसरे के संवेगों का बोध क्षेत्र में सरकारी शिक्षक बेहतर पाये गय तथा दूसरे के संवेगों का प्रबंधन क्षेत्र में सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा गैर–सरकारी शिक्षक अधिक बेहतर पाये गये। अतः यह कहा जा सकता है कि सरकारी एवं गैर–सरकारी दोनो शिक्षकों की भागीदारी संवेगात्मक बुद्धि के सभी क्षेत्रों में दृष्टिगोचर हुयी है।

सन्दर्भ

1. आहूजा बेलीराम (2006), शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. मिश्र करूणा शंकर (1990), शिक्षा मनोविज्ञान के नये क्षितिज, अनुभव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहाबाद–211006।
3. मंगल एस. के. (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, प्रैन्टीक हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
4. माथुर एस. एस. (2001), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. सिंह मनोज कुमार, शिक्षा और समाज, आदित्य पब्लिशर्स, बीना (म. प्र.) –2000।
6. श्रीधर (2007), टीचर ऐफिसीअंसी एण्ड कोरिलेट ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स, नीलकमल पब्लिकेशन्स, हैदराबाद, वोल्यूम–7, पृष्ठ–25–27।
7. सिंह मनोज कुमार (2000), शिक्षा और समाज, आदित्य पब्लिशर्स, बीना (म.प्र.)।